आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 24 January, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - अब और एक पल भी व्यर्थ नहीं गंवाना है

चौबीस जनवरी। हम सभी की सुन्दर तपस्या चल रही है। हम इस तपस्या के द्वारा स्वयं में साईलेन्स पावर भर रहे है। यह साईलेन्स पावर आगे चलकर विश्व कल्याण का महान कार्य करेगी।

हम सभी यह सत्य न भूलें की जिन आत्माओं ने सर्व ईश्वरीय खज़ाने प्राप्त किये होंगे, जिन्होंने अपना समय और संकल्प सफल किया होगा वह महान सितारे, चमकती हुई मणियां विश्व की सबसे बड़ी सेवा करेंगी।

अब आने वाले समय में उनका ही समय होगा। जो भागदौड़ कर रहे है, जो तेरे मेरे और पद पोजीशन के चक्कर में पड़कर योगमुक्त हो गये है, जो अपना टाइम व्यर्थ संकल्पों में वेस्ट कर रहे है उनके हाथ तो पश्चाताप के अलावा कुछ भी नहीं लगेगा।

तो सवेरे से ही चिन्तन करेंगे ....

" **मेरा हर सेकण्ड बहुत important है** .. मेरा हर संकल्प बहुत महान है .. मुझे इनको सफल करना है .. अलवेलापन में रहकर .. सुस्ति के वश होकर .. बूरे संग में आकर .. मुझे इन शक्तियों को नष्ट नही करना है "

तो ज्वलास्वरुप योग का बहुत अच्छा अभ्यास आज सवेरे से ही प्रारंभ करेंगे। बाबा से रूहरिहान करते हुए और स्वयं को श्रेष्ठ स्वमान में स्थित करके बाबा को सच्चे मन से शुक्रिया करेंगे।

इन दोनों के द्वारा हमारा मन ईश्वरीय प्रेम से भर जाता है और चित एकाग्र हो जाता है। तब हमारी स्थिति सहज योगयुक्त हो जाती है। हम बीजरूप हो जाते है।

तो अभ्यास करेंगे ....

" **मैं आत्मा मास्टर ज्ञान सूर्य .. मास्टर सर्वशक्तिमान .. परमधाम में सर्वशक्तिमान के पास हूँ .. उसकी किरणों के नीचे हूँ .. उसकी किरणें मुझमें समा कर नीचे सारे विश्व में फैल रही है** "

यह सेवा बहुत ही पुण्य की सेवा है। इससे हमारे पुण्य बहुत ज्यादा जमा होते है। हम बाबा को निहारते रहे। और उसकी शक्तियाँ स्वयं में भरते चले।

" जैसे मधुमक्षी की तरह उससे सबकुछ चुष रहे हो .. जो कुछ उसका है उसे स्वयं में भरते जा रहे है " .....

... यह अभ्यास हम करते चले ...

इसके लिए सवेरे से ही हम स्वयं को अच्छे चिन्तन के द्वारा एकबार अवश्य मग्न स्थिति में ले चलेंगे। प्रभु प्रेम में स्वयं को मग्न करेंगे।

" उसने मुझे क्या क्या दिया इस जीवन में .. उसको ज़रा याद करेंगे .. तो उसके लिए बहुत ज्यादा प्यार उमर पड़ेगा .. मन उसके प्यार में लहराने लगेगा "

आज सवेरे से ही प्रभु प्रेम में मग्न अवस्था का अनुभव करते हुए बीजरूप का अभ्यास करेंगे। जब मन मग्न हो जाता है तो बीजरूप में स्थित होना उसके लिए बहुत सरल हो जाता है।

तो आज सारा दिन हम स्वयं को इस स्वमान में रखेंगे ....

"मैं पूर्वज हूँ .. दाता हूँ .. मास्टर भाग्य-विधाता हूँ .. मास्टर वरदाता हूँ"

और ....

" परमधाम में स्थित होकर बाबा से सर्वशक्तियों की किरणें स्वयं में भरते रहेंगे .. और यह किरणें सारे संसार में फैलाते रहेंगे "

बहुत सुखद फीलिंग होगी। देने का सुख बहुत महान है। कुछ अलग ही है। देते चले और स्वयं को आनन्द से भरपूर करते चले।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org